

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर
महायोगी गुरु गोरखनाथ योग संस्थान
एवं

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद्, गोरखपुर द्वारा आयोजित
साप्ताहिक योग प्रशिक्षण शिविर एवं योग-अध्यात्म-शैक्षिक कार्यशाला
15 से 21 जून, 2019 श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर 16 जून। साप्ताहिक योग प्रशिक्षण शिविर एवं योग-अध्यात्म शैक्षिक कार्यशाला के द्वितीय दिवस में 'योग की प्रासंगिता' विषय पर आयोजित व्याख्यान माला में मुख्य अतिथि के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० मुरली मनोहर पाठक ने कहा कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के प्रयास के द्वारा विगत पांच वर्षों से 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाने का जो निर्णय संयुक्त राष्ट्रसंघ ने लिया उसका परिणाम यह हुआ कि आज पूरी दुनिया भारत को योग गुरु स्वीकार कर रही है। पाश्चात्य देशों का योग के प्रति आकर्षण होने से आज का नया भारत भी पुनः अपनी प्राचीन संस्कृति और विरासत की ओर लौट रहा है। आज संसार का प्रत्येक मानव त्रिविध दुःख से संतप्त है। इन तीनों दुखों से निवृत्ति का मार्ग योग दर्शन बताता है। मनुष्य के मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इन चार प्रकार के अन्तःकरण का निरोध ही योग है। मनुष्य के जीवन में अन्तःकरण की वृत्ति तरंगों की तरह निरन्तर चलती रहती है। जिस प्रकार तरंगों के रहते जल में परछाईं देखना सम्भव नहीं है, उसी प्रकार चित्त वृत्ति के निरोध के बिना आत्मदर्शन या आत्मसाक्षात्कार होना सम्भव नहीं है। इसीलिए योगसूत्र में योग को "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" इस सूत्र से परिभाषित किया गया है।

योग की प्रासंगिता पर प्रकाश डालते हुए प्रो० पाठक ने कहा कि योग दर्शन दर्शनशास्त्र के साथ ही प्रत्येक व्यक्ति के जीवन जीने की कला है। आज योग के आठ अंगों में केवल आसन को ही अपनाकर लोगों को बहुत परिवर्तन का अनुभव हो रहा है। यदि योग के आठ अंगों का अभ्यास किया जाय तो निश्चित ही तीनों दुखों से एक साथ छुटकारा मिल सकता है।

उन्होंने श्रोताओं का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि आज योग द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आठ प्रकार के ब्रह्मचर्य का पालन करना भी नितान्त आवश्यक है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में गोरक्षपीठ के प्रधान पुरोहित आचार्य रामानुज त्रिपाठी ने कहा कि योग का अभ्यास करने से जीवन को सुख पूर्वक जीते हुए जीवन के अन्तिम क्षणों में भी इसी योग के द्वारा स्वेच्छा से शरीर का त्याग भी किया जा सकता है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में गोरखनाथ मन्दिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ ने कहा कि आज दुनिया योग को अपनी जीवन शैली बनाने के लिए कटिबद्ध है। सर्वत्र योग दिवस को बड़े ही उत्साह व उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इसी क्रम में गोरक्षपीठ भी प्रतिवर्ष साप्ताहिक योग शिविर के आयोजन के माध्यम से सैकड़ों प्रशिक्षुओं को योग के विविध पक्षों का ज्ञान कराती है।

कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ. अरविन्द कुमार चतुर्वेदी ने तथा आभार ज्ञापन प्रभारी डॉ. चन्द्रजीत यादव ने किया। अतिथियों का स्वागत व माल्यार्पण विद्यापीठ के आचार्य डॉ. प्रांगेश कुमार मिश्र ने किया।

इस अवसर पर डॉ. रोहित कुमार मिश्र, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, डॉ. दिग्विजय शुक्ल, श्री कलाधर पौड्याल, श्री पुरुषोत्तम चैबे, श्री शशि कुमार यादव, श्री दीपनारायण, श्री नित्यानन्द तिवारी, श्री शुभम कुमार मिश्र, श्री विनय गौतम इत्यादि विशेष रूप से उपस्थित रहे।